साध्वी प्रज्ञा की कुण्डली का विश्लेषण :-

निरयण ग्रह स्पष्ट

ग्रह	राशी	अंश	दिशा	नक्षत्र	पद	राशी स्वामी	नक्षत्र स्वामी
लग्न	वृश्चिक	24:37:53		18 ज्येष्ठा	3	मंगल	बुध
सूर्य	कर्क	03:52:05		08 पुष्य	1	चन्द्र	शनि
चन्द्र	मकर	26:41:38		23 धनिष्ठा	2	शनि	मंगल
मंगल	कर्क	07:57:12	मार्गी	08 पुष्य	2	चन्द्र	शनि
बुध	कर्क	18:24:15	मार्गी	09 आश्लेषा	1	चन्द्र	बुध
गुरू	तुला	03:43:03	मार्गी	14 चित्रा	4	शुक्र	मंगल
शुक्र	सिंह	15:35:19	मार्गी	11 पूर्वा फाल्गुनी	1	सूर्य	शुक्र
शनि	मेष	27:25:17	मार्गी	03 कृतिका	1	मंगल	सूर्य
राहु	कुंभ	09:41:30	वक्री	24 शतभिषा	1	शनि	राहु
केतु	सिंह	09:41:30	वक्री	10 मघा	3	सूर्य	केतु
यूरेनस	कन्या	11:47:54	मार्गी	13 हस्त	1	बुध	चन्द्र
नेपच्यून	वृश्चिक	04:46:20	वक्री	17 अनुराधा	1	मंगल	शनि
प्लूटो	कन्या	01:45:42	मार्गी	12 उत्तरा फाल्गुनी	2	बुध	सूर्य

राहु व केतु के स्पष्ट मान दिये गये है।

लग्न कुंडली

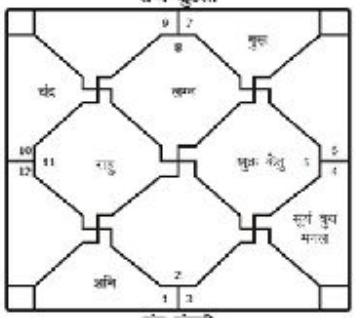

नवमांश

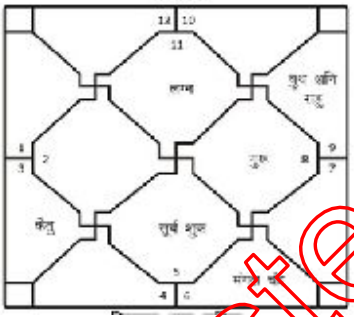

UnRegistered

_नेट पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर सुश्री साध्वी प्रज्ञा का जन्म 20 जुलाई1970 सोमवार मध्यप्रदेश के इतिया नामक स्थान पर बाद दोपहर 04.20 मिनिट पर हुआ है । वृश्चिक लग्न की इनकी कुण्डली में लग्नेश मंगल नवम भाव में अपनी नीच राशि कर्क में बैठा है किन्तु मकर राशि स्थित तृतीय भावस्थ चन्द्रमा से केन्द्र में होने के कारण मंगल नीचभंग राजयोग का निर्माण कर रहा है जो इन्हे अत्यन्त उर्जावान बनाता है ।वृश्चिक लग्न एक संघर्षशील लग्न है .इस लग्न में पैदा हुए जातकों को सीधे सीधे कुछ नही मिलता इन्हें जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये काफी संधर्ष करना पड़ता है।इनकी लग्न कुण्ड़ली में चर्तुथ भाव में स्थित राहू एवं चर्तुथ भाव के स्वामी शनि का षष्ठ भाव में नीच राशि का होने के कारण जन्म स्थान से दूरी को बताता है।षष्ठ में बैठा शनि अपनी सप्तम दृष्टि से द्वादश भाव को देख रहा है एवं नवम राशि में नीच राशि में बैठा मंगल भी द्वादश भाव पर अपनी चौथी दृष्टि से प्रभाव ड़ाल रहा है, चूँकि द्वादश भाव जेल से सम्बन्ध रखता है एवं इनका शनि अपने शत्रु सूर्य के कृतिका नक्षत्र का होने के कारण एवं मंगल भी अपने शत्रु शनि के पुष्य नक्षत्र में होने के कारण इन्हें अक्टूबर 2009 में

शनि की महादशा प्रारम्भ होने के बाद कानूनी विवादों का सामना करना पड़ा एवं उसी दौरान जेल यात्रा का योग भी बना ।

वर्तमान में इनकी शनि की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा में बुध का प्रत्यान्तर चल रहा है जो कि 30 जुलाई 2019 तक रहेगा । शनि तृतीयेश एवं चर्तुथेश होकर षष्ठ स्थान पर नीच का होकर बैठा है,जो पीड़ाकारक है । अर्न्तदशा नाथ शुक्र सप्तमेश एवं द्वादेश होकर सिह राशि में अपने ही पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में कुण्डली के दशम भाव में बैठा है जो लाभदायक है एवं प्रत्यान्तरदशा नाथ बुध अष्टमेश एवं एकादेश होकर बुध के अश्लेषा नक्षत्र में नवम भाव में विराजित है ।इनकी कुण्डली में वर्तमान समय में अर्न्तदशा एवं प्रत्यान्तरदशा आगामी चुनावों में इनका सहयोग कर रही है इसी प्रकार इनकी राशि से एकादश भाव में एवं लग्न में गोचर कर रहा बृहस्पति,लग्न से द्वितीय भाव में गोचर कर रहा शनि अपनी तीसरी दृष्टि से जनता के स्थान अर्थात लग्न कुण्डली के चौथें स्थान पर भी इनको चुनावों में सहयोग दे रहा है,किन्तु इनके जन्मकालीन चतुर्थेश शनि के नीच राशि में होने से एवं निरयण चलित भाव कुण्डली का चर्तुथ भाव पाप कर्तरी योग में होने से चुनाव की राह आसान नही है ,साथ ही इनके माह अक्टूबर 2019 से प्रारम्भ होने वाली शनि की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा भी पीड़ाकारक होगी । मेरा मानना है कि काफी संघर्ष के बाद बहुत कम अन्तर से यह आगामी लोकसभा चुनाव में विजयी होगें किन्तु एक सांसद के रूप में इनका कार्यकाल विवादित रहेगा एवं सम्भवतया यह अपना कार्यकाल पूरा नही कर पायेगी ।

UnRegistered

रविन्द्र कुमार वधवा

बूंदी राजस्थान